प्रश्न:

''आरज़्भ के समय कलीसिया कैसी थी?''

उज़्र:

जीवन के हर क्षेत्र में, हमें एक मापक या नमूने की आवश्यकता पड़ती है। उदाहरण के लिए, समय जानने के लिए हम अपनी घड़ी के इतिहास पर निर्भर नहीं रह सकते। ''यह घड़ी स्कॉटलैण्ड में रहने वाले मेरे दादा की है'' इस बात की कोई गारन्टी नहीं है कि यह सही समय भी बताएगी। इसी तरह ''स्कॉटलैण्ड में रहने वाले मेरे दादा इस कलीसिया के सदस्य थे'' कहने का अर्थ यह नहीं है कि वह नये नियम की कलीसिया ही है। समय जानने का एकमात्र भरोसे योग्य स्रोत केवल परमेश्वर का सूर्य है। अमेरिका में, सूर्य द्वारा चैक किए गए प्रतिदिन के समय के सिग्नल आरलिंग्टन, विर्जीनिया में नेवल ऑज़्ज़र्वेटरी से दिखाए जाते हैं; सब घड़ियों का समय उन सिग्नलों के अनुसार मिलाया जाता है।

हर दुकानदार यह जानना चाहता है कि एक किलो चावल के थैले में एक हज़ार ग्राम चावल हैं या नहीं या एक गज में छज़्तीस इंच ही हैं। इस प्रकार हमारे पास भार और माप को जानने के लिए मानक होते हैं। उदाहरण के लिए, वाशिंगटन डी. सी. में द ज़्यूरो ऑफ़ स्टैंडर्ड्स के पास एक तहखाने में 3.28 मीटर लज़्बा नेशनल प्रोटोटाइप मीटर, और 2, 204 पौंड भारी नेशनल प्रोटोटाइप किलोग्राम है। अमेरिका को फ्रांसीसी सरकार द्वारा उपहार में दिए गए ये मॉडल 90 प्रतिशत प्लेटिनम और 10 प्रतिशत इरिडियम से बने हैं, ज़्योंकि ये धातुएं बहुत कम सिकुड़ती या फैलती हैं। इन मॉडलों से भिन्न कोई भी मापक सही नहीं होगा।

इसी प्रकार धर्म में भी न बदलने वाला एक पज़्का मॉडल या मापक होना आवश्यक है! परमेश्वर ने आदर्श कलीसिया के सर्वोज़म महत्व को समझा और उसने वह कलीसिया बनाई है जो आज भी देखी जा सकती है, ताकि सब कलीसियाएं अपने आप को ढालकर इसके अनुसार बना सकें। परमेश्वर की कलीसिया के मॉडल का वह मानक वाशिंगटन या किसी दूसरे शहर में ज़्यूरो द्वारा सुरक्षित तालाबन्द नहीं रखा जाता। परमेश्वर द्वारा दिया गया कलीसिया का मॉडल या नमूना सदा तक रहने वाली उसकी बाइबल में दिया गया है।

आकाश और पृथ्वी चाहे टल जाएं, परन्तु उस नमूने की तस्वीर कभी नहीं मिटेगी। मनुष्यों की परज़्पराएं बदलती रहेंगी, परन्तु परमेश्वर की कलीसिया वही रहेगी। प्लेटिनम और इरिडियम (एक सफेद धातु) बड़ी सावधानी से रखने के बावजूद थोड़ा-बहुत बदल सकते हैं; परन्तु बाइबल पर न तो सर्दी का असर होता है न गर्मी का, न सरकारों के गिरने न युगों के बीतने का। मनुष्य के मापक में कमियां हैं, परन्तु परमेश्वर ने अपने मॉडल को ''स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था'' (याकूब 1:25) कहा है।

यदि कोई आदर्श किसी व्यज़्ति अर्थात मापक को ढूंढ़ना चाहता है जिससे दूसरे लोग अपनी तुलना कर सकें, तो गंभीरता से की गई खोज का जवाब है, ''सुसमाचार की चार पुस्तकों अर्थात मज़ी, मरकुस, लूका और यूहन्ना में जाएं और उसे ढूंढ़ें।'' यदि आप आदर्श कलीसिया को ढूंढ़ना चाहते हैं तो चाहिए कि कलीसिया को मनुष्य की रीतियों और शिक्षाओं से गंदा और भ्रष्ट करने से पूर्व, इसके आरज़्भ में इसके अस्तित्व को देखें। कलीसिया के आरज़्भ की कहानी नये नियम में प्रेरितों के काम की पुस्तक से आरज़्भ होती है।

कलीसिया में प्रवेश के लिए परमेश्वर का नमूना या मॉडल

परमेश्वर की कलीसिया में प्रवेश करने का ज़्या नियम है? बादलों में अपने पिता के पास ऊपर उठा लिए जाने से पहले यीशु ने प्रेरितों से पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के लिए यरूशलेम में प्रतीक्षा करने के लिए कहा था। परमेश्वर के आत्मा के आने पर वे सब एक मन होकर एक ही जगह इकट्ठे हुए थे। उन्हें इस बात की चिंता नहीं होनी थी कि ज़्या कहना है या ज़्या प्रचार करना है, ज़्योंकि परमेश्वर के आत्मा ने शज़्द उनके मुंह में डालने थे। वे आज के सब प्रचारकों से अलग थे ज़्योंकि बातें करते हुए व सिखाते हुए वे कोई गलती नहीं कर सकते थे, ज़्योंकि परमेश्वर का आत्मा गलती नहीं कर सकता है। इस तरह हम दो हज़ार साल पहले दिए गए इस नमूने का अध्ययन करने के महत्व को देखते हैं; जिस बात का परमेश्वर चाहता है कि प्रचार किया जाए वह निश्चित तौर पर आत्मा के द्वारा हर बात में अगुआई पाने वाले इन प्रचारकों ने किया था। कलीसिया में प्रवेश की शर्तों के बारे में परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त उन लोगों ने ज़्या कहा था?

यीशु मसीह का प्रचार

पहले तो, देखें कि परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त इन लोगों ने *प्रचार किया।* वे बच्चों से बातें नहीं कर रहे थे, न ही उनकी बातें किसी ऐसे व्यज़्ति के लिए थीं जो आज उन्हें मानकर स्वयं उन पर अमल न कर सके। वे अपनी बातों से ज़िज़्मेदार लोगों पर असर डालना चाहते थे। लोग अपने उद्धार के लिए आत्मा के उतरने का इंतज़ार नहीं कर रहे थे। यदि ऐसा होता तो प्रचार की कोई आवश्यकता नहीं होनी थी, ज़्योंकि परमेश्वर अनावश्यक बातों में समय बर्बाद नहीं करता। प्रचार की आवश्यकता उस समय भी थी और आज भी है। लोगों के उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना सुसमाचार के संदेश का प्रचार करने पर आधारित है (1 कुरिन्थियों 1:21; रोमियों 10:13, 14)। बिना वचन का प्रचार किए लोगों का उद्धार नहीं

हो सकता, इसलिए मसीह ने इसी काम के लिए अपने प्रेरितों को बड़ी सावधानी से सिखाया था।

उन्होंने ज़्या प्रचार किया था? प्रेरितों 2 अध्याय में हम पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के पहले सुसमाचार के संदेश को पढ़ते हैं:

> हे इस्राएलियो, ये बातें सुनो: कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिस का परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुज़्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए जिसे तुम आप ही जानते हो। उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला। परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया: ज़्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।
>
> ... न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया, और न उसकी देह सड़ने पाई। ... सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी (प्रेरितों 2:22-36)।

जब आत्मा से प्रेरणा पाए हुए प्रचारक ने इन ठोस और तेज से भरे तथ्यों की घोषणा की, तो भीड़ में सुनने वालों "के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो, हम ज़्या करें?" (प्रेरितों 2:37)। उस गंभीर और मन को टटोलने वाले प्रश्न के उज़र में प्रचारकों ने ज़्या कहा?

सुसमाचार की आज्ञा का पालन

परमेश्वर के प्रचारकों ने लोगों को न केवल मुर्दों में से यीशु के जी उठने अर्थात सारी सृष्टि के पहलौठे का शुभसमाचार बताया, बल्कि उन्होंने यह भी बताया कि वे उद्धार पाने के लिए ज़्या करें। उन प्रचारकों का विश्वास था कि यीशु सबके लिए मरा है, पर उन्हें यह नहीं लगा कि यही काफी है, उन्हें लगा कि लोगों को चाहे वे पुरुष हों या स्त्रियां उसके बलिदान का पता होना आवश्यक है। इसलिए उन्होंने उन्हें क्रूस की कहानी ही बताई। प्रेरितों का यह विश्वास बिल्कुल नहीं था कि कैसा भी जीवन या काम होने के बावजूद सबका उद्धार हो जाएगा। उन्होंने लोगों को बताया कि वे पाप में हैं और परमेश्वर की सृष्टि के सामने खोए हुए हैं।

लोगों ने माना कि वे पाप में हैं और उन्होंने उस पाप से छुटकारा पाने का ढंग जानने की बिनती की। वे परमेश्वर के बिना और आशाहीन नहीं मरना चाहते थे। फिर से, हम पूछते हैं कि उन प्रचारकों ने ज़्या कहा था? "उद्धार पाकर अपनी पसन्द की कलीसिया में शामिल हो जाओ"? आज बहुत से विवेकी सेवक यही कहते हैं; परन्तु उस आदर्श प्रवचन (मॉडल सर्मन) में परमेश्वर के प्रचारकों ने ऐसे नहीं बताया था। तो फिर उन्होंने ज़्या कहा था, "विश्वास करो तो तुज़्हारा उद्धार हो जाएगा"? नहीं! "पतरस ने उनसे कहा, मन

फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (2:38)। उस बात को परमेश्वर की अनुमति से नहीं बदला गया है। यह बाइबल की हर बात से मेल खाता है। यदि मैं यह कहूं कि उद्धार पाने के लिए केवल विश्वास ही आवश्यक है, तो मैं परमेश्वर के दिए हुए नमूने का विरोध करने वाला ठहरूंगा। विश्वास करना आवश्यक है; क्योंकि बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न नहीं किया जा सकता, लेकिन दुष्टात्मा भी तो विश्वास करते हैं! हज़ारों लोग ऐसे हैं जो विश्वास तो करते हैं लेकिन उनका उद्धार नहीं हुआ। इतना विश्वास होना आवश्यक है कि आगे बढ़कर अपने पापों से मन फिराकर उन पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया जा सके। बाइबल की दूसरी सारी बातें प्रेरितों 2:38 के शब्दों से पूरी तरह मेल खाती हैं, क्योंकि परमेश्वर के उसी आत्मा ने इसकी हर बात को लिखा है।

इसके अलावा, हर प्रचारक इस बात से सहमत होगा कि यदि कोई पापी यीशु में विश्वास करता है, अपने पापों से मन फिराता है और बपतिस्मा लेता है, तो उस पापी का उद्धार होता है, वह मसीही बन जाता है, अर्थात नया जन्म पा लेता है। किसी को इस प्रबन्ध पर संदेह नहीं है; यह पूरी तरह से बाइबल में दिए गए परमेश्वर के नमूने (मॉडल) से मेल खाता है। आज लोग अलग-अलग नमूने देते तो हैं, पर सबका कहना यही है कि परमेश्वर का दिया गया नमूना ही सही है। क्या मैं और आप आत्मा को किसी अज्ञात मापक में ढालने की हिम्मत कर सकते हैं? अनन्तकाल की खातिर, भला यही होगा कि हम उस मापक का इस्तेमाल करें जिस पर कोई संदेह नहीं है!

तो फिर परमेश्वर की कलीसिया में प्रवेश करने का नियम क्या था? पहला, यीशु मसीह का प्रचार किया गया। फिर प्रचार करने वाले ने लोगों को मन फिराने और बपतिस्मा लेने के लिए कहा। बाइबल बताती है कि जितने लोगों ने पतरस द्वारा किए गए परमेश्वर के वचन के प्रचार को ग्रहण किया था उन सब ने बपतिस्मा लिया और उसी दिन तीन हज़ार के लगभग लोग उनमें मिलाए गए थे। यदि आप और मैं भी वैसे ही करें तो क्या होगा? यदि हमें यह पता न हो कि हमारा उद्धार हो गया है तो हमें इसका कैसे पता चल सकता है? यदि परमेश्वर द्वारा ठहराए गए नमूने (मॉडल) को मानकर उसके अनुग्रह की गारन्टी नहीं है तो फिर और किसकी बात पर यकीन किया जा सकता है?

प्रेरितों के काम की पुस्तक में उस आदर्श कलीसिया की सदस्यता की शर्तें स्पष्ट की गई थीं। यीशु के जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण की कहानी बताते हुए एक संदेश सुनाया गया था। इन महान और महत्वपूर्ण तथ्यों पर विश्वास करने के बाद भी (प्रेरितों 2:36), पापियों को उद्धार नहीं मिला था अर्थात उनकी स्थिति अभी भी वैसे ही थी; और वे अभी भी कलीसिया में नहीं थे। पवित्र आत्मा ने उस आदर्श कलीसिया (मॉडल चर्च) में सदस्यता लेने की शर्तें केवल मसीह में विश्वास होना ही नहीं बल्कि पापों की क्षमा के लिए मन फिराना और बपतिस्मा लेना भी आवश्यक ठहराया। यदि वह कलीसिया जिसमें आप आराधना करते हैं सही रीति से आदर्श कलीसिया का अनुसरण करती है, तो उस कलीसिया की सदस्यता की वही शर्तें भी होंगी।

उदाहरण के लिए, आदर्श कलीसिया (या मॉडल चर्च) में छोटे बच्चों को सदस्यता नहीं दी जाती थी, क्योंकि हर सदस्य ने वचन को ''ग्रहण किया'' हुआ था (प्रेरितों 2:41)। आदर्श कलीसिया की सदस्यता लेने के लिए किसी के पक्ष में वोट डालना आवश्यक नहीं था क्योंकि हम पढ़ते हैं कि उसमें वचन को ग्रहण करना आवश्यक है।

विश्वास के एक नियम के लिए परमेश्वर का नमूना या मॉडल

आदर्श कलीसिया का विश्वास का नियम या धर्मसार (अकीदा) ''प्रेरितों की शिक्षा'' था (प्रेरितों 2:42)। इसका अर्थ यह हुआ कि आदर्श कलीसिया में सदस्यों को इस बात की समझ थी कि उन पर न तो मूसा की, न सुलैमान की, न दाऊद की, न यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की शिक्षा लागू होती थी। यदि आपकी कलीसिया जोसेफ स्मिथ, मेरी बेकर ऐडी, एलन जी. वाइट, जॉन वैसली, मार्टिन लूथर, अलेग्ज़ेन्डर कैज़्पबेल, चर्च काउंसिलों, पोप, चर्च फादर्स द्वारा संचालित होती है तो यह शिक्षा एक ऐसा बोझ है जिसकी जानकारी आदर्श कलीसिया को नहीं है। आदर्श कलीसिया के सदस्यों को एक ही बात झूठ की आत्मा को सच्चाई के आत्मा से अलग करती थी और वह यह थी कि ''क्या प्रेरितों की यही शिक्षा थी?'' (देखिए 1 यूहन्ना 4:6.)

संगति के लिए परमेश्वर का नमूना या मॉडल

आदर्श कलीसिया में संगति की बहुतायत और नज़दीकी थी अर्थात उनमें निष्कपट मेल जोल था। कठिन समयों में सदस्यों ने कलीसिया के लिए अपनी सज़्पज़ि तक बेच दी थी (प्रेरितों 2:44, 45)। सामान्य परिस्थितियों में, उनके पास अपने परिवारों की देखभाल के लिए धन आदि रखा होता था (1 तीमुथियुस 5:8, 16)। दोनों ही स्थितियों में भाइयों के लिए प्रेम (1 पतरस 1:22) और मसीह के लिए प्रेम की प्रेरणा पर आधारित निष्कपटता थी (2 कुरिन्थियों 8:8)।

प्रभु-भोज के लिए परमेश्वर का नमूना या मॉडल

आदर्श कलीसिया में सदस्य सप्ताह के पहले दिन, संडे स्कूल के लिए नहीं (यद्यपि यह अच्छा है), प्रचारक की सुनने के लिए नहीं (यद्यपि यह अच्छा है), बल्कि स्मरण के लिए भोज में भाग लेने के लिए इकट्ठे होते थे (प्रेरितों 20:7)। जिस कलीसिया में आप आराधना करते हैं क्या वह हर रविवार (या प्रभुवार) प्रभु भोज लेती है? यदि उसने आदर्श कलीसिया अर्थात प्रेरितों की शिक्षा से खुद को बदल लिया है, तो आपको चाहिए कि उस कलीसिया को छोड़ दें।

कलीसिया में आराधना के लिए परमेश्वर का नमूना या मॉडल

उस आदर्श कलीसिया में उद्धार पाने के बाद लोग क्या करते थे? वे आराधना कैसे करते थे? हमें इस बात का अनुमान लगाने की आवश्यकता नहीं है कि पहले मसीही

आराधना कैसे करते थे, क्योंकि बाइबल परमेश्वर को स्वीकृत आराधना का एक नमूना या मॉडल ठहरा देती है। प्रेरितों 2:42 हमें बताता है, "और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।"

वे लोग आत्मा की प्रेरणा प्राप्त प्रचारकों की शिक्षा में बने रहे। न वे किसी साम्प्रदायिक कलीसिया की शिक्षा को मानते थे और न ही मनुष्य द्वारा बनाई हुई धर्मसार या अकीदे की किसी पुस्तक को। प्रेरितों की शिक्षा सही थी और यह उतनी ही आवश्यक थी जितनी परमेश्वर चाहता था।

धर्म में, प्रेरितों की शिक्षा के अलावा कोई भी दूसरी शिक्षा सत्य नहीं हो सकती (देखिए मत्ती 10:14, 15, 40; 15:13)। आज बहुत सी कलीसियाएं अपने आप को वर्तमान घटनाओं से जोड़े रखती हैं; उनके पास्टर राजनैतिक हालात पर भाषण देते हैं। बड़ी-बड़ी साम्प्रदायिक कलीसियाएं केवल प्रेरितों की शिक्षा में बने रहने से इन्कार ही नहीं करतीं, बल्कि मसीही होने का दावा करने वाले बहुत से लोग बाइबल अध्ययन ही लगातार नहीं करते हैं। बहुत से लोग साप्ताहिक संडे स्कूल के पाठ से अपने आप में संतुष्ट हो जाते हैं। मित्रो, धर्म में कोई व्यक्ति यदि प्रेरितों की शिक्षा का अध्यनन नहीं करता तो वह सही नहीं हो सकता क्योंकि किसी दूसरी शिक्षा से उसे पता ही नहीं चल सकता कि वह परमेश्वर की है या नहीं।

कलीसिया के प्रारम्भिक सदस्य, प्रेरितों की शिक्षा को मानकर, संगति में बने रहकर एक दूसरे के साथ सहभागी और एक दूसरे के अंग थे। इसी कारण संगति में वे अपनी आमदनी में दिल खोलकर योगदान देते थे। वे भोजन को मिलाने में या कलीसिया की किसी दूसरी योजना को बनाने में व्यस्त नहीं रहते थे बल्कि अपने मनों को देते थे।

प्रेरितों की शिक्षा से प्रारम्भिक मसीहियों की रोटी तोड़ने में जो कि प्रभु भोज मनाना है, बने रहने में भी अगुआई होती थी। बिना प्रेरितों की शिक्षा के उन्हें यह पता नहीं चल सकता था कि उन्हें रोटी तोड़ने में बने रहना चाहिए। आज बहुत से लोग कई-कई हफ़्तों बाद रोटी तोड़ते हैं; परन्तु प्रारम्भ में मसीही कलीसिया के लिए स्वीकृत परमेश्वर के नमूने के अनुसार रोटी तोड़ते थे। इब्रानियों 10:25, 1 कुरिन्थियों 16:2 और प्रेरितों 20:7 से हम सीखते हैं कि प्रेरितों की शिक्षा ने मसीही लोगों को सप्ताह के पहले दिन रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे होते रहने में अगुआई दी थी। उसी शिक्षा से, अर्थात उन्हीं शिक्षकों से सीखकर, यरूशलेम की कलीसिया सप्ताह के पहले दिन रोटी तोड़ती और कटोरे में से पीती थी। कलीसिया के लिए परमेश्वर का स्वीकृत मापक हर सप्ताह भोज में भाग लेना था। आज हमें चाहिए कि अपनी अगुआई के लिए ठहराए गए नमूने से हटकर कुछ न करें।

परमेश्वर की आदर्श कलीसिया की आराधना में एक और बात थी कि इसमें प्रार्थनाएं होती थीं; उनमें भी विश्वासी भाई इस विश्वास से कि उनकी बिनतियों से बहुत लाभ होता है प्रार्थना में बने रहते थे। आज बहुत से तथाकथित मसीही और प्रचारक प्रार्थना में विश्वास नहीं करते; वे आधुनिकतावादी मसीही हैं; उन्हें दिखाई नहीं देता कि संसार के चलने में प्रार्थना कैसे परिवर्तन कर सकती है। हम यहां प्रार्थना के महत्व पर चर्चा नहीं करेंगे। परन्तु

याद रखना आवश्यक है कि इस पृथ्वी पर पहली कलीसिया, अर्थात परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त लोगों द्वारा शिक्षा प्राप्त कलीसिया के सदस्य प्रार्थना करने में लौलीन रहते थे। आइए उस आदर्श से जो हमारे सामने ठहराया गया है, नीचे न गिरें।

प्रेरितों ने मसीही लोगों को परमेश्वर और एक दूसरे के सामने अपने मनों के सुर में भजन, स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाना सिखाया था। जो बात उन्होंने एक जगह की कलीसिया को सिखाई थी वही हर जगह की कलीसिया को सिखाई गई थी।

परमेश्वर की कलीसिया की अन्य विशेषताएं

आदर्श कलीसिया या मॉडल चर्च परमेश्वर की अगुआई पर निर्भर थी, जैसा कि प्रार्थना पर ज़ोर देकर दिखाया गया है (प्रेरितों 2:42; 4:24; 12:12)। आदर्श कलीसिया में, एक मन होने और एकता से सब सदस्य एक कलीसिया थे (प्रेरितों 4:32) जिससे एक मन और एक स्वर होकर वे अपने परमेश्वर की महिमा कर सकते थे (रोमियों 15:6)। यदि वह कलीसिया जहां पर आप आराधना करते हैं गुटों में से एक गुट, कलीसियाओं में एक कलीसिया, डिनोमिनेशनों में से एक डिनोमिनेशन, ''उस अदृश्य कलीसिया की'' एक तथाकथित शाखा है, तो यह आदर्श कलीसिया नहीं है।

आदर्श कलीसिया में अनुशासन था। अयोग्य सदस्यों को संगति से निकाल दिया जाता था (देखिए प्रेरितों 5:1-11; 1 कुरिन्थियों 5:13)। आदर्श कलीसिया में सुसमाचार प्रचार करने की उमंग भी थी। ''हर पूर्णकालिक प्रचारक'' नहीं बल्कि उसका हर सदस्य (प्रेरितों 8:4) उद्धार पाकर इतना आनन्दित था कि उसकी इच्छा होती थी कि दूसरे लोग भी उसकी तरह उद्धार पाएं। प्रारम्भिक मसीही हर रोज (प्रेरितों 5:28, 42) यीशु के बारे में सिखाने से नहीं रुके, जिस कारण उन्होंने अपनी शिक्षा से पूरे ''यरूशलेम को भर दिया।'' इसके अलावा, आदर्श कलीसिया में सच्चा आनन्द था। ''आनन्द और मन की सीधाई से'' (प्रेरितों 2:46) वे परमेश्वर की महिमा करते और सही सोच वाले सब लोगों में प्रिय थे।

सारांश

सब साम्प्रदायिक कलीसियाओं से सम्बन्ध तोड़कर, परमेश्वर की स्वीकृत आदर्श कलीसिया की ओर लौट आएं, और अपने आप को इससे मिलाएं। हम सब उस ईश्वरीय नमूने की ओर वापस आ जाएं तो मसीहियत में कितनी शानदार एकता हो जाए! हम सब एक हो जाएंगे और एक ही घर में आराधना करने और प्रभु भोज इकट्ठे लेने के लिए तैयार हो जाएंगे। जिस प्रकार गज का माप एक ही होता है और उसमें छत्तीस इंच ही होते हैं वैसे ही परमेश्वर की ओर से स्वीकृत कलीसिया केवल एक ही है। जैसे गज से मापने के लिए अलग-अलग माप नहीं होते वैसे ही आदर्श कलीसिया (मॉडल चर्च) के अनुसार चलने के लिए अलग-अलग शिक्षाओं वाली कलीसियाओं में से किसी एक को चुनने की आवश्यकता नहीं है!